विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 47 : नई दिल्ली : 12-18 फरवरी 2021

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग की प्रभावक यात्रा संपन्न कर रायपुर के बिल्कुल निकट पधार गए हैं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां भी करीब ६२ दिनों के बाद गुरुचरणों में पहुंच गई हैं। साध्वीप्रमुखाजी का ५०वां चयन दिवस पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में भव्य रूप में समायोजित हुआ। आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में रायपुर में १६-१९ फरवरी को १५७वां मर्यादा महोत्सव और २१ फरवरी को दीक्षा समारोह समायोज्य है। इस दीक्षा समारोह हेतु पूज्यप्रवर द्वारा एक श्रेणी आरोहण सहित तीन दीक्षाएं घोषित हैं। आचार्यप्रवर रायपुर प्रवास की संपन्नता के पश्चात नागपुर की ओर प्रस्थान करेंगे। मार्ग में छत्तीसगढ़ के अनेक क्षेत्रों का स्पर्श एवं प्रवास भी निर्धारित है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण रायपुर की ओर

गणतंत्र दिवस पर प्रदान की संविधान के प्रति निष्ठा व सजगता की प्रेरणा

२६ जनवरी। भारत का गणतंत्र दिवस। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सोनारपाल से घोड़ागांव के लिए प्रस्थान किया। हजारों वृक्षों से युक्त जंगल से घिरे हुए विहार पथ पर सूर्य किरणों के आतप का प्रभाव कम ही था। इस कारण मौसम सुहावना-सा लग रहा था। मार्गवर्ती 'करनडोला' के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। स्थानीय जैन समाज के लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। एक परिवार अपनी अस्वस्थ बच्ची को लेकर पूज्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुआ। आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाया। फरसागुड़ा में भी कई ग्रामीण आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। पूज्यप्रवर उनके निकट पधारे तो उन्होंने श्रीचरणों में नमन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देकर संकल्पत्रयी ग्रहण कराई। पूज्यप्रवर करीब १४ कि.मी. का विहार कर घोड़ागांव में स्थित शासकीय हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा-'आज २६ जनवरी है। भारत का गणतंत्र दिवस है, भारत देश के लिए एक महत्त्वपूर्ण दिन है। कितने-कितने गीत निर्मित हैं, जिनके माध्यम से देश के प्रति भक्ति, प्रीति का भाव पुष्ट हो जाए। भारत को आजादी मिली थी। फिर संविधान लागू हुआ। कोई भी राष्ट्र हो, संगठन हो, संविधान उसके लिए महत्त्वपूर्ण होता है। संविधान राष्ट्र/संगठन का संचालन करने में सहयोगी होता है।

संविधान का होना भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात होती है। संविधान का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। व्यक्तियों में संविधान पालन की निष्ठा हो और पालन कराने वाले सजग हों तो संविधान का पालन अच्छी तरह हो सकता है। संविधान बनाने वालों ने कितना श्रम कर उसका निर्माण किया होगा। संविधान के नियम इतने कठोर भी न हों कि उनका पालन दुःशक्य हो और इतने लचीले भी न हों कि उससे देश/संगठन का संचालन ठीक तरह न हो पाए। अति कड़ाई और अति लचीलापन दोनों न हों तो संविधान राष्ट्र/संगठन के सुव्यवस्थित संचालन में सहयोगी बन सकता है।

संविधान के अतिक्रमण में दण्ड का भय रहे तो आदमी उसके अतिक्रमण से बच भी सकता है। गलती पर कारवाई हो तो गलती से बचने का मौका मिल सकता है। भारत में विधायिका है, कार्यपालिका है तो न्यायपालिका भी है। इन तीनों के समुच्चय से देश अच्छे रूप में चल सकता है।'

पूज्यचरणों से हुआ नवनिर्मित विद्यालय भवन का लोकार्पण

२७ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः घोड़ागांव से दहीकोंगा के लिए प्रस्थान किया। हल्की ठंडी हवा मौसम को कुछ शीतल रूप प्रदान किए हुए थी। 'लकड़ीबहार' नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावन

बना। हजारों घने पेड़ों से सघन बने हुए वन में नक्सलियों का यत्किंचित प्रभाव अब भी है, झाड़ियों के बीच सी.आर.पी.एफ. के जवानों की सशस्त्र उपस्थिति और उनके साथ दिख रहा खोजी कुत्ता इसकी पुष्टि कर रहा था। लोगों ने बताया कि इस क्षेत्र में नक्सलियों का प्रभाव सुकमा, दंतेवाड़ा जिलों से तो बहुत कम है, किन्तु यहां से करीब पन्द्रह कि.मी. भीतर उनका प्रभाव आज भी है। विहार पथ के आसपास अन्य वृक्षों के साथ 'बांस' भी बड़ी तादाद में थे। बांस के कई वृक्षों की ऊंचाई अन्य वृक्षों की तुलना में मानों दुगुनी थी।

आचार्यप्रवर की अगवानी में दहीकोंगा के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आचार्यप्रवर उनके निकट पधारे तो उन लोगों ने श्रीचरणों में अपना वंदन समर्पित किया। दहीकोंगा में प्रवासित एकमात्र दिगम्बर जैन परिवार के सदस्यों ने भी पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने विद्यालयी बैण्ड की धुन के द्वारा आचार्यप्रवर के चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

पूज्यप्रवर करीब १२.८ कि.मी. का विहार कर दहीकोंगा में शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवनिर्मित भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री श्रीनाथ प्रसाद जोशी ने पूज्यप्रवर का सविनय स्वागत करते हुए कहा--'हमारे विद्यालय का यह नवनिर्मित भवन है। अभी तक इसका उद्घाटन नहीं हुआ है, हम चाहते हैं कि आपके चरणों से ही इसका उद्घाटन हो।' पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाकर नवनिर्मित प्रांगण में प्रवेश किया। आचार्यप्रवर के चरणों से अपने विद्यालय भवन को उद्घाटित हुआ देखकर विद्यालय के प्रिंसिपल, शिक्षक तथा अन्य ग्राम्यजन अभिभूत थे। लोगों का कहना था कि हमने कभी नहीं सोचा था कि ऐसे महापुरुष हमारे गांव में आएंगे। आचार्यश्री के चरणों से हमारी धरती पावन हो गई। हम इनके दर्शन कर धन्य हो गए।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में पुनर्जन्मवाद की विवेचना की।

कार्यक्रम में विद्यालय के प्रिंसिपल श्री श्रीनाथ प्रसाद जोशी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'परम पूज्य गुरुजी के शुभ आगमन से मेरा यह गांव और मेरा यह विद्यालय पवित्र और धन्य हो गए। हे महापुरुष! आपके सान्निध्य में हमें जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा मिली है। आप अत्यंत कठोर जीवन जीकर हमारे उद्धार के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। मैं आपके दर्शन कर अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं। आपके संदेशों को स्वयं अपने जीवन में उतारूंगा और वे संदेश मेरे विद्यार्थियों के जीवन में भी आएं, यह प्रयत्न करूंगा।'

उपस्थित ग्रामवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा-'इस विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ-साथ ईमानदारी आदि के अच्छे संस्कार भी प्राप्त हों, ताकि उनमें ज्ञान का प्रकाश और सदाचार की सुगन्ध दोनों का विकास हो सके।'

रात्रि में चित्रकोट के विधायक श्री राजमन बेंजाम, जगदलपुर के विधायक श्री रेखचंद जैन और छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास निगम के चेयरमेन श्री मिथिलेश स्वर्णकार आदि ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। कोण्डागांव के कुटुम्ब न्यायाधीश श्री जितेन्द्रकुमार जैन, एडीजे श्रीकृष्णपाल सिंह भदौरिया तथा एडीजे श्री शांतनु देशलहरे भी पूज्य सन्निधि में पहुंचे। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा आदि के विषय में अवगति प्रदान की। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासाओं को भी समाहित किया।

ज्योतिचरण के चरणयुगल ने पूर्ण की ५०००० कि.मी. की पदयात्रा

२८ जनवरी। फौलादी संकल्पों से सराबोर दो नन्हें कोमल कदमों ने आज एक और उपलब्धि का वरण कर लिया, जो सामान्यजन के लिए आश्चर्य और तेरापंथ धर्मसंघ के लिए गौरव का विषय थी। ज्योतिचरण के चरणयुगल ने आज अपनी यात्रा के ५०००० किलोमीटर के आंकड़े को पार किया तो आस्थाभावों से ओतप्रोत भक्तहृदयों में घोष गूंजित हो उठा--'जय जय ज्योतिचरण, जय जय महाश्रमण।' आचार्यप्रवर ने अपने आचार्यकाल के दौरान लगभग २१६९२ किलोमीटर की पदयात्रा सम्पन्न की तो पूर्व में मुनि, महाश्रमण व युवाचार्य अवस्था में उनके द्वारा किए गए करीब २८३०८ किलोमीटर के पैदल सफर को मिलाकर उनकी पदयात्रा का आंकड़ा पचास हजार किलोमीटर हो गया। आचार्यप्रवर ने इस पदयात्रा के दौरान हिन्दुस्तान के तेईस राज्यों तथा नेपाल व भूटान में विहरण कर जनोद्धार का महान कार्य किया।

आचार्यप्रवर ने आज प्रातः दहीकोंगा से कोंडागांव की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर के गतरात्रिक प्रवास स्थल विद्यालय के प्रिंसिपल श्री श्रीनाथ प्रसाद जोशी ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञभाव अर्पित किए। विद्यालय के छात्र विद्यालयी बैंड के साथ पूज्यप्रवर के आगे-आगे गतिमान थे। दहीकोंगा के भावाभिभूत कई ग्रामीण भी आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी प्रणति समर्पित कर रहे थे। पूज्यप्रवर गांव की सड़क से राजमार्ग पर पधारे।

आचार्यप्रवर के गतरात्रिक प्रवास स्थल से करीब सात सौ मीटर की दूरी पर 'माइल स्टोन' की विशाल प्रतिकृति लगी हुई थी, जिस पर अंकित था--'आचार्यश्री महाश्रमण की परमार्थ को समर्पित ५०००० किलोमीटर पदयात्रा।' यही वह संभावित स्थान था, जहां आचार्यप्रवर की पदयात्रा के करीब ५०००० किलोमीटर पूरे हो रहे थे। आचार्यप्रवर वहां पधारे तो जयनिनादों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। आदिवासी लोग अपने पारंपरिक लोकनृत्य को प्रस्तुति दे रहे थे। स्थानीय ग्राम्यजनों ने अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के लिए वहां आज प्रातःकाल विशाल रंगोली का निर्माण किया था। आचार्यप्रवर रंगोली के समीप आसीन हुए तो संक्षिप्त कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। कार्यक्रम में मुनिवृंद और साध्वीवृंद ने पृथक्-पृथक् गीतों के माध्यम से आचार्यप्रवर का वर्धापन किया।

साध्वीवर्याजी ने कहा--'आज का यह दिवस, ये पल ऐतिहासिक हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इनका साक्षी बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अब तक करीब पचास हजार कि.मी. की पदयात्रा सम्पन्न कर ली है, यह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। आचार्यप्रवर दृढ़ संकल्प के धनी हैं, जो भी संकल्प करते हैं, उसे पूर्ण करके ही रहते हैं। आपने यात्राओं के जो-जो भी संकल्प लिए, उन्हें पूरा कर दिखाया। पदयात्रा के पीछे आचार्यप्रवर का मुख्य लक्ष्य है आत्मोत्थान के साथ जनोद्धार। मैं इस अवसर पर श्रीचरणों की अभिवंदना करती हुई मंगलकामना करती हूं कि आचार्यप्रवर ने अब तक जितनी यात्रा की है, आगे उससे दुगुनी यात्रा कर जन-जन का उद्धार करें और हमें भी ऐसी शक्ति प्रदान करें कि हम भी आपश्री के साथ-साथ यात्रा करते हुए अपना और जनता का उद्धार कर सकें।'

मुख्यनियोजिकाजी ने कहा-'आज का यह पवित्र क्षण तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के सृजन का क्षण है। इस ऐतिहासिक क्षण में हम सब मानसिक आह्लाद का अनुभव कर रहे हैं। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने भारत के उस छोर से इस छोर तक प्रलम्ब यात्राएं कीं। अपने चरण से हिन्दुस्तान को पवित्र किया। हिन्दुस्तान से बाहर नेपाल व भूटान में भी यात्रा करने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के आप प्रथम आचार्य हैं। आपने जन-जन का कल्याण करने और मानवता के उत्थान का संकल्प किया है। आज के इन मांगलिक क्षणों में मैं आचार्यश्री का वर्धापन करती हूं। आज साध्वीप्रमुखाजी यहां सदेह तो उपस्थित नहीं हैं, किन्तु उन्होंने आचार्यश्री के लिए अपनी भावना एक संदेश के रूप में भेजी है। मैं उसका वाचन कर रही हूं--

अर्हम

ये चरण नहीं रुक पाएंगे

यायावरी ज्ञान का प्रतीक है और अनुभवों का खजाना है। आगम व्याख्या साहित्य में देशाटन को धर्मप्रभावना और शिष्य-सम्पदा की वृद्धि का हेतु माना गया है।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हिन्दुस्तान में वही व्यक्ति सफल होता है, जो घुमक्कड़ होता है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी इस सदी के महान यायावर हैं। उनकी यात्राओं की दिलचस्प कहानियां पढने में भी आह्लादकारी हैं। उनके साथ यात्रा करना कितना उपलब्धि भरा होता है, यह तो अनुभव ही किया जा सकता है।

आचार्यश्री महाश्रमण का सुदर्शन व्यक्तित्व उनके कद से बहुत उंचा है। उनका मुखमण्डल अध्यात्म तेज से दीप्त रहता है। अपने हिमालयी संकल्प के द्वारा उन्होंने पांच दशकों से भी कम समय में पचास हजार किलोमीटर धरती माप ली है।

पांव-पांव चलने वाले इस सूरज को मौसम का मिजाज कभी रोक नहीं पाया और न प्राकृतिक आपदाएं विचलित कर पाईं। कोरोना महामारी जैसे वैश्विक संकट में भी आचार्यप्रवर के चरण रुके नहीं, निरन्तर बढते रहे। पूरी दुनिया को शांति का सन्देश देने वाले महातपस्वी आचार्यवर के गतिशील चरण कहीं रुकने वाले हैं भी नहीं।

कवि के शब्दों में -

युग के हिमगिरि गल जाएंगे,
पल के सागर चुक जाएंगे।
रवि शशि के रथ रुक जाएंगे।
ये चरण नहीं रुक पाएंगे।।

अध्यात्म का आलोक बांटने वाले महापुरुष के चरणों में अंतहीन प्रणतियां।

चरचारी (छत्तीसगढ़) **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
२७ जनवरी २०२१

मुख्यमुनिश्री ने कहा--'हम आज पचास हजार किलोमीटर की यात्रा परिसम्पन्न करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी का भारतीय ऋषि परंपरा के महान यायावर के रूप में अभिनंदन कर रहे हैं, वंदन कर रहे हैं। ये पवित्र पादारविन्द निरंतर गतिशील हैं। इन गतिशील ज्योतिचरणों ने कितने-कितने गांवों, कस्बों, नगरों, महानगरों, जंगलों, घाटियों, बागानों को पवित्र किया है। आचार्यप्रवर अपने पावन चरणों से सबमें पवित्रता का संचार कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने अपने परिश्रम से अनेक-अनेक ऐसे कार्य किए हैं, जो तेरापंथ धर्मसंघ में कीर्तिमान हैं। गुरुदेव तुलसी ने भारत की बहुत यात्रा की, किन्तु आचार्यप्रवर ने न केवल भारत की यात्रा की, अपितु विदेशी धरती को भी पावन किया और विदेश में चतुर्मास भी सम्पन्न किया। हिन्दुस्तान के भी कई ऐसे राज्य आचार्यप्रवर के चरणों से पवित्र बने, जहां पहले तेरापंथ के किसी आचार्यप्रवर का पदार्पण नहीं हुआ था। आचार्यप्रवर ने पूरे भारत की एक साथ यात्रा कर एक ऐतिहासिक और महान कार्य किया है। आचार्यप्रवर ने कभी कीर्तिमान बनाने के लिए यात्रा नहीं की। आपने जनोपकार के लिए पदयात्राएं कीं और जिनसे लाखों-लाखों लोग लाभान्वित भी बने हैं। हम मंगलकामना करते हैं कि ये ज्योतिचरण यूं ही बढ़ते रहें और हम भी इन चरणों के साथ यात्रायित रहें।'

परमराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा-'साधु यात्रा करता है। मूल यात्रा तो है-अंतर्यात्रा, संयम की यात्रा, अध्यात्म की यात्रा। जैन साधु के लिए विहारचर्या प्रशस्त बताई गई है। मानों कि जैन शासन में परंपरागत रूप में पदयात्रा की व्यवस्था है। आज भी हमारी विहारचर्या जीवंत है। जैन शासन भगवान ऋषभ से संबद्ध है और वर्तमान का जैन शासन भगवान महावीर से निकटता से जुड़ा है। हमारा धर्मसंघ परम पूज्य आचार्य भिक्षु से जुड़ा हुआ है। परम श्रद्धेय भिक्षु स्वामी जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य थे। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा चली। इस परंपरा में महान सेवा करने वाले, रक्षा करने वाले, साधना करने

वाले आचार्य हुए। आचार्य भिक्षु की परंपरा के प्रथम दशक में नवमे आचार्य परम पूज्य गुरुदेव तुलसी हुए, जिन्होंने हमारे धर्मसंघ में प्रलम्ब यात्रा करने वाले प्रथम आचार्य के रूप में मानों प्रतिष्ठा प्राप्त की। उनसे पहले हमारे धर्मसंघ के कोई भी परम पूज्य आचार्यप्रवर न कोलकाता पधारे और न दक्षिण भारत में पधारे। आचार्यों में गुरुदेव तुलसी ने सर्वप्रथम वह यात्रा की थी। मुझे परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ की आचार्य परंपरा के प्रथम दशक के अंतिम आचार्य परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। उन्होंने भी गुरुदेव तुलसी के साथ कोलकाता और दक्षिण भारत की यात्रा मुनि अवस्था में की थी। अपनी वृद्धावस्था में भी उन्होंने अपने ढंग से यात्रा की थी। मुझे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ भी यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ, उनके सेवा-सान्निध्य का अवसर मिला। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) से मुझे दीक्षा प्राप्त हुई, उनके पास भी रहने का मौका मिला।

हमारी यात्रा चल रही है। यात्रा जितनी हो सके, अच्छी बात है। स्वास्थ्य की अनुकूलता, पैरों की सक्षमता बनी रहे तो यात्राएं और भी (जितना योग हो) हो सकती हैं।'

मुनिवृन्द की ओर मुखातिब होकर आचार्यप्रवर ने कहा-'तुम लोगों को यथासंभव साधन की सेवा देने का मौका न मिले, यह काम्य है। पदयात्रा में तुम लोग सेवा देते रहो और तुम लोग भी साथ में (जैसा योग हो) भ्रमण करते रहो।'

यह बाह्य यात्रा हमारी अंतर्यात्रा को और निखारने में योगभूत बनी रहे और संयम यात्रा से जुड़ी हुई विहार यात्रा भी होती रहे। अभी हम दक्षिण यात्रा सम्पन्न कर छत्तीसगढ़ की यात्रा में हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वीप्रमुखाजी भी छत्तीसगढ़ में पहुंच चुकी हैं। वे आज हमारे निकट नहीं हैं। उनका संदेश मुख्यनियोजिकाजी ने पठित किया है। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशा आदि साध्वियां तथा मुख्यमुनि महावीर आदि संत हमारे साथ हैं। एक बड़ा साध्वी समुदाय साध्वीप्रमुखाजी के साथ है और उससे भी बड़ा साध्वी समुदाय बहिर्विहार में हैं। इसी प्रकार गुरुकुलवासी संतों से कई गुना ज्यादा संत बहिर्विहार में हैं। मैं धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों को यहां बैठा-बैठा याद कर रहा हूं और उनके लिए मंगलकामना कर रहा हूं। समण-समणी समुदाय में भी आज यहां मेरे पास कोई नहीं है, मैं उनके प्रति भी मंगलकामना करता हूं। श्रावक-श्राविकाओं, मुमुक्षुओं आदि के प्रति भी मंगलकामना। हम सभी अच्छी साधना और अच्छा कार्य करते रहें।'

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर कोंडागांव की ओर प्रस्थित हुए। निकट ही एक बैनर पर अंकित था--**'आचार्यश्री महाश्रमण की परमार्थ को समर्पित ५०००० किलोमीटर पदयात्रा। इस दूरी को तय करने के लिए आचार्यश्री महाश्रमण करीब ६ करोड़ ६४ लाख ४४ हजार ४४४ कदम पैदल चले हैं। यह दूरी पृथ्वी की परिधि से सवा गुना अधिक है। महात्मा गांधी की दांडी यात्रा से १२५ गुना ज्यादा है। एक हजार दो सौ उन्नीस मैराथन के बाराबर है। भारत के पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर या उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर की पंद्रह बार यात्रा करने से भी ज्यादा है।'**

विहार के दौरान बनियागांव के सरपंच आदि लोगों ने बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आज के विहार में कुछ विलम्ब हो गया था, किन्तु आकाश में बादलों की उपस्थिति ने सूर्य के तेज पर मानों नियंत्रण बनाए रखा। इस कारण मौसम समशीतोष्ण-सा बना रहा। पूज्यप्रवर ने मार्ग में बस्त जिले से कोंडागांव जिले में प्रवेश किया।

शिल्पनगरी कोंडागांव में महान शिल्पकार का श्रद्धामय स्वागत

'शिल्पनगरी' के नाम से विख्यात कोंडागांव में आचार्यप्रवर के पदार्पण से स्थानीय लोग श्रद्धाभावों से ओतप्रोत बने हुए थे। लोगों के समूह आचार्यप्रवर की अगवानी में पहुंचते जा रहे थे। मात्र दो तेरापंथी परिवारों के निवास क्षेत्र में जनता की विशाल उपस्थिति स्थानीय जैन एवं जैनेतर समाज के उल्लास को स्पष्ट दर्शा रही थी। जनता की भारी भीड़ के बीच सांप्रदायिक भेद तो मानों खो-सा गया था। आज तो मानों सबकी एक ही

पहचान थी-महाश्रमणभक्त। भव्य स्वागत जुलूस से पूज्यप्रवर का विहार पथ भी महाश्रमणमय बना हुआ था। पूज्यप्रवर करीब १३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर कोंडागांव के चावर हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को मन को सुमन बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर कोंडागांववासियों ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं ग्रहण कीं।

स्थानीय जैन समाज के अध्यक्ष श्री शांतिलाल सुराणा, महामंत्री श्री महेन्द्र सुराणा, श्रीमती नीतू सुराणा, सुश्री कनिका सुराणा, दिगम्बर समाज की ओर से श्री आर.के. जैन, तेजस्विनी मिश्रा, निकिता दुगड़, श्रीमती प्रेरणा जीरावला, श्रीमती हर्षा गोलछा और श्री नरेन्द्र दुगड़ ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी।

जगदलपुर के विधायक श्री रेखचंद जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कोंडागांव जैन समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। दुगड़ परिवार के सदस्यों ने अपने आराध्य के स्वागत में गीत को प्रस्तुति दी। जैन समाज के बालक-बालिका मंडल ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सायंकाल आचार्यप्रवर कोंडागांव चावर हायर सेकेण्ड्री स्कूल से प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर का विहार कोंडागांव शहर के बीच से हो रहा था, इसलिए नागरिकों को आचार्यप्रवर के दर्शन का मौका अनायास मिल गया। स्थान-स्थान पर खड़े लोग पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। सैंकड़ों जैन एवं जैनेतर लोग पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चल रहे थे।

मार्ग में नवनिर्मित बांधा तालाब के समीप तीन प्रतिमाएं खड़ी थीं। रानी दुर्गावती, श्री गुंदाधुर और डॉ. जयदेव बघेल--इन तीनों प्रतिमाओं के विषय में बताया गया कि रानी दुर्गावती छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों की रक्षा करते-करते शहीद हुई थीं। श्री गुंदाधुर यहां के आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे और डॉ. जयदेव बघेल ने कोंडागांव में 'शिल्पकला' की स्थापना की थी। आज भी कोंडागांव की पीतल और लोहे से बनी शिल्पकला प्रख्यात है। आज तो कुछ-कुछ लोग मिट्टी से भी शिल्प निर्मित करने लगे हैं। स्थान-स्थान पर स्थानीय शिल्पकला के शोरुम्स भी दिखाई दे रहे थे। बांधा तालाब को झील का-सा रूप दिया गया है, जिसमें लोग नौका विहार भी करते नजर आ रहे थे।

स्थानीय विधायक और छत्तीसगढ़ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहन मरकाम आदि ने भी मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए और फिर वे भी आज के गंतव्य स्थल तक पैदल चले। स्थानीय जैन समाज की पुरजोर प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ओसवाल जैन संघ के भवन में भी पधारे। पूज्यप्रवर करीब ३.६ कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर कोंडागांव में ही स्थित सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय प्रबंधन कमेटी के अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन, प्रचार्य श्री बी.आर. साहू आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

रात्रि में कोण्डागांव के कलेक्टर श्री पुष्पेन्द्रकुमार मीणा ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें विविध विषयक वार्तालाप के दौरान पावन प्रेरणा प्रदान की। कोण्डागांव राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री महेन्द्र सागर, सह प्रचारक श्री हर्ष लाहोटी, राममन्दिर निर्माण कमेटी के अध्यक्ष श्री कांतिलाल पटेल, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र साहू आदि ने भी आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

महान यायावर आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में आस्थासिक्त अभिव्यक्तियां

परमाराध्य आचार्यप्रवर द्वारा अपनी पदयात्रा के पचास हजार किलोमीटर के आंकड़े को पार करने के प्रसंग को हिन्दुस्तान के कई प्रमुख समाचारपत्रों ने वरीयता के साथ प्रकाशित किया। इस ऐतिहासिक अवसर की जानकारी प्राप्त कर कुछ विशिष्ट लोगों ने अपनी भावनाएं भी प्रेषित कीं, जो इस प्रकार हैं--

संदेश

५ फरवरी २०२१

अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जनोपकार के उद्देश्य के साथ ५०,००० किलोमीटर की पदयात्रा सम्पन्न की, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

चरैवेति...चरैवेति...के मंत्र के साथ श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी पदयात्रा के दौरान सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की अलख जगाई है। सदाचार के साथ ध्यान एवं योग का भी उन्होंने लोगों को प्रशिक्षण दिया है। आपकी पदयात्रा से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का दीपक निरंतर प्रज्वलित हो, ऐसी मैं ईश्वर से कामना करता हूं।

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात

संदेश

५ फरवरी २०२१

यह हर्ष का विषय है कि अहिंसा यात्रा के प्रणेता तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा नेपाल, भूटान व भारत के २३ राज्यों से गुजर कर अहिंसा का संदेश देने के लिए ५०००० किलोमीटर लम्बी पदयात्रा कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया है।

जैन समाज सदैव अहिंसा के सिद्धांतों पर चलता है और जैन मुनि अपनी कठिन सात्विक जीवनशैली से समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करते हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में ७५० से अधिक साधु-साध्वियों सहित हजारों कार्यकर्ता देश-विदेश में समाजोत्थान के कार्य में लगे हैं। वे राष्ट्रपति भवन से लेकर गांवों की झोंपड़ी तक शांति का संदेश देने का कार्य कर रहे हैं।

आचार्यश्री ने समाज को हमेशा नैतिकता, परोपकार, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं अहिंसा की प्रतिस्थापना के लिए उल्लेखनीय कार्य किए हैं। उन्होंने नशामुक्ति, युवा जागृति, संस्कार निर्माण जैसे संकल्पों को पूरा कर देश में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों पर बल देने जैसे समाज सुधार के कार्य भी किए हैं।

मुझे विश्वास है कि श्री मुनि महाश्रमणजी जैसी विभूतियों द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों की पालना और उनके बताए रास्ते पर चलकर हम मानव कुन्दन समाज की स्थापना कर सकते हैं।

चरैवेति-चरैवेति सूत्र के साथ गतिमान आचार्यश्री महाश्रमणजी की ५०००० किलोमीटर की यात्रा अपने आप में विलक्षण है। इस महान कार्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संदेश

११ फरवरी २०२१

प्रसन्नता का विषय है कि ''अहिंसा यात्रा'' के प्रणेता तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने देश-विदेश में अहिंसा का संदेश देते हुए ५० हजार किलोमीटर की पदयात्रा पूर्ण करने का पावन एवं ऐतिहासिक कार्य किया है। इस दौरान उन्होंने भारत के २३ राज्यों सहित नेपाल एवं भूटान की पदयात्रा की है। आचार्यश्री ने अपनी अहिंसा यात्रा का शुभारंभ वर्ष २०१४ में दिल्ली के लालकिले से किया था।

आचार्यश्री महाश्रमणजी भारतीय ऋषि परंपरा को जीवित रखते हुए निरंतर पदयात्रा कर रहे हैं। वे साधु की कठोर दिनचर्या का पालन करते हैं, जप-ध्यान साधना में लीन रहते हैं तथा प्रवचन भी देते हैं। उनके सान्निध्य में सर्वधर्म सम्मेलन, प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठियां आदि आयोजित होते रहते हैं, जो समाज सुधार की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

मैं आचार्यश्री के पावन चरणों में सादर वंदन करते हुए उन्हें शत-शत नमन करता हूं।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

असम के मुख्यमंत्री श्री सर्वानंद सोनोवाल ने अपनी भावनाएं अंग्रेजी भाषा में प्रेषित की। यहां प्रस्तुत है उसका भावानुवाद--

संदेश

१० फरवरी २०२१

यह जानकर अत्यंत आह्लाद हुआ कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अहिंसा के संदेश को प्रसारित करते हुए भारत के २३ राज्यों के साथ-साथ नेपाल और भूटान की पदयात्रा की है।

आचार्यश्री ने मानव-मानव को शांति और सद्भावना का संदेश देने तथा अहिंसा की महत्ता के प्रति जन-मानस में जागरूकता पैदा करने के लिए जो महान प्रलम्ब पदयात्रा की है, वह समाज और मानवता के लिए समर्पण का एक आदर्श उदाहरण है।

मैं आचार्यश्री एवं उनके अनुयायियों के प्रति इस पदयात्रा के लिए हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूं तथा यह कामना करता हूं कि आपकी यह यात्रा युवा पीढ़ी को अहिंसा के सिद्धान्तों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी।

सर्वानंद सोनोवाल
मुख्यमंत्री, असम

पूरे विहार में पैदल चलकर अहिंसा यात्रा में संभागी बने छत्तीसगढ़ कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष

२६ जनवरी। प्रातः परम पूज्य आचार्यप्रवर के विहार से पूर्व ही छत्तीसगढ कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मोहन मरकाम आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए। उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा--'गुरुदेव! आपने कल पचास हजार किलोमीटर की यात्रा परिसंपन्न की। हम उसकी स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए एक चौक का निर्माण करेंगे।' आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान कर कोंडागांव में लंजोड़ा की ओर प्रस्थान किया। श्री मरकाम भी आचार्यप्रवर के साथ-साथ चलने लगे। वे पूज्यप्रवर के आज के पूरे विहार में आचार्यप्रवर के आसपास पैदल चले। उन्होंने इसके लिए अपने अन्य कार्यक्रमों को गौण कर दिया।

आचार्यप्रवर नारंगी नदी पर बने पुल से इस पार पधारे। मसोरा के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर के अपने गांव में पदार्पण से लंजोड़ा के जैन परिवारों में प्रसन्नता का वातावरण था। प्राप्त जानकारी के अनुसार लंजोड़ा में पांच जैन परिवार हैं और पांचों ही परिवार पारख जाति के हैं। मार्ग में एक परिवार को अपने घर के सम्मुख पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर लगभग १३.५ कि.मी का विहार कर लंजोड़ा में स्थित ऋषि विद्यालय गायत्री शक्तिपीठ में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के व्यवस्थापक मंत्री श्री भरत साहू ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में समय की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उसके सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में श्री बसन्त पारख और सुश्री मान्या पारख ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

ऋषि विद्यालय गायत्री शक्तिपीठ की ओर से श्री भरत साहू ने कहा--'यह हम सबका परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के पर्दापण के रूप में एक स्वर्णिम सुयोग प्राप्त हुआ है। मैं इसके लिए आचार्यश्री के चरणों में कोटि-कोटि नमन करता हूं।'

पारख परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी युवक परिषद-टोहाना की स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत की गई। तदुपरान्त परिषद की ओर से भावाभिव्यक्ति भी दी गई।

पाक्षिक संबोध : नुकसानदेह है गुस्सा

गत कल पक्खी थी, किन्तु पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष के द्वार पर चीटियां बहुत थीं। मुनिवृंद के आवागमन से उनकी विराधना न हो, इस दृष्टि से पूज्यप्रवर ने यह तय किया कि पाक्षिक खमतखामणा कल (२८ जनवरी को) न किया जाए और न ही संतों की सामूहिक अर्हतवन्दना रखी जाए। आज (२९ जनवरी) सायंकालीन अर्हतवन्दना के पश्चात संतों ने पूज्यप्रवर से पाक्षिक खमतखामणा किए। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने पाक्षिक संबोध प्रदान करते हुए कहा--'आदमी के भीतर अनेक वृत्तियां होती हैं। उनमें एक है आक्रोश, गुस्सा, क्रोध। कभी-कभी आदमी को पुष्ट कारण के आधार पर तो कभी-कभी अपुष्ट कारण के आधार पर गुस्सा आ जाता है। गुस्से में आदमी कभी-कभी हाथ भी उठा लेता है, कभी क्रोध में कटु या असत्य बोल लेता है, कभी मन में गुस्सा कर लेता है।

गुस्सा आदमी की एक दुर्बलता है। गुस्सा निन्यानवे प्रतिशत तो नुकसान करने वाला है। शास्त्रकार की वाणी है--'कोहो पीइं पणासेइ' (क्रोध प्रीति का नाश करता है।) ग्रुप में बार-बार गुस्सा करने से ग्रुप से विच्छिन्नता की स्थिति आ सकती है। उसके बाद दूसरे ग्रुप में भी जाना हो और वहां भी गुस्सा किया जाए तो वहां से भी निकलना पड़ सकता है। शास्त्रकार ने कहा--'जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो।' (जैसे सड़े हुए कानों वाली कुतिया सभी स्थानों से निकाली जाती है।) गुस्सैल व्यक्ति को अपने साथ कठिन कौन रखना चाहेगा। संघ की अपेक्षा से सेवा के लिए अन्य किसी सिंघाड़े में जाना हो, वह तो अच्छी बात है, किन्तु प्रकृति की जटिलता के कारण ग्रुप बार-बार बदलना पड़े, यह अच्छा नहीं होता।

गुस्से से ग्रुप के शांतिपूर्ण माहौल में कमी आ सकती है। कलह से हमारी अप्रभावना हो सकती है और उस कारण संघ की वृद्धि में भी कमी आ सकती है। स्वयं ज्यादा गुस्सा करने वाला प्रवचन में लोगों को गुस्से को कम करने का उपदेश देंगे तो लोगों पर उसका कितना क्या असर हो पाएगा ? जिसे गुस्सा ज्यादा आता है, उसके लिए अच्छे कार्य में एकाग्रता रख पाना भी कठिन हो सकता है। सहवर्तियों में आपस में कलह होता रहे तो अग्रगण्य को भी परेशानी हो सकती है। गुस्से के कारण शारीरिक स्वास्थ्य में भी कठिनाई हो सकती है। मूल बात है कि गुस्से से आत्मा का नुकसान होता है।

शास्त्र में कहा गया है--'महप्पसाया इसिणो हवंति, न हु मुणी कोवपरा हवंति।' साधु गुस्से में शोभित नहीं होता। शांति रखने वाला साधु शोभायमान होता है। ऐसे निर्देशों के माध्यम से शास्त्रकार ने विभिन्न प्रकार की प्रेरणाएं प्रदान की हैं। कोई साधु ज्यादा विद्वान न भी बन पाए, प्रवचन न भी दे पाए, किन्तु वह यदि शांति के साथ एक ग्रुप में जमकर रहता है तो उसका महत्त्व हो सकता है।

गुस्सा एक प्रकार की भावात्मक बीमारी है। दीर्घश्वास, अनुप्रेक्षा आदि के प्रयोग से उस पर नियंत्रण करने का प्रयास करना चाहिए। कड़ी बात कहने के लिए आवेश करना जरूरी नहीं होता। शांति से भी कड़ी बात कही जा सकती है। न्यायाधीश फांसी की सजा सुनाता है, किन्तु उसके लिए गुस्सा करना आवश्यक है क्या? बिना कटु बोले भी कड़ी बात कही जा सकती है।

हमारे व्यक्तित्व की एक कसौटी है कि आवेश पर नियंत्रण कितना है। हमें अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिए अच्छी-अच्छी बातों को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। उनमें से एक अच्छी बात है गुस्सा नहीं करना। उपशम के अभ्यास से गुस्से को नियंत्रित किया जा सकता है। आदमी को मिलनसार रहना चाहिए। गुस्से से मिलनसारिता में कमी आ सकती है। सामने वाला गुस्सा करे तो भी शांति रखने का प्रयास करना चाहिए। जितना संभव हो गुस्से को प्रतनु बनाने का प्रयास करना चाहिए।'

धन्य हो गया हमारा क्षेत्र

३० जनवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः लंजोड़ा से बोरगांव के लिए प्रस्थित हुए। आज मौसम

कुछ बदला हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। आसमान में छाए बादलों के कारण सूर्य अदृश्य बना हुआ था, इस कारण आतप प्रायः नहीं था। लोगों ने बताया कि आसपास के कुछ क्षेत्रों में गत रात्रि में वर्षा हुई है। हल्की ठंडी हवा उस बारिश के प्रभाव को दर्शा रही थी। 'जुगानी' नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। वर्तमान में वह नदी प्रायः सूखी अवस्था में दिखाई दे रही थी। मार्ग के आसपास कई किलोमीटर तक दिखाई दे रही सघन वृक्षावली इस क्षेत्र को वन का रूप प्रदान किए हुए थी।

जुगानी गांव और जुगानी कैम्प के ग्रामीणों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर करीब १० कि.मी का विहार कर बोरगांव में पधारे। शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज सायं तक का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जनता को इच्छाओं के संयम की प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती अनिता मंडावी ने कहा--'सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति-इन तीन आयामों के साथ अहिंसा यात्रा करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी का आज हमारे विद्यालय में आना हुआ है, यह हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है। आपके पदार्पण से हमारा विद्यालय पवित्र हो गया। आपकी यात्रा मंगलमय हो।'

फरसगांव के ब्लॉक विकास अधिकारी श्री वी.आर. सिन्हा ने कहा-'हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि आप जैसे महापुरुष के दर्शन हुए। हमारा क्षेत्र आपके चरणों के स्पर्श से धन्य हो गया।'

अहिंसा यात्रा प्रणेता के स्वागत में उमड़े जैनेतर लोग

सायंकाल करीब चार बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर बोरगांव से फरसगांव की ओर प्रस्थित हुए। हल्की ठंडी हवा और आसमान में छाए बादल मौसम को अब भी प्रभावित किए हुए थे। फरसगांव के लोग पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में काफी समय से सोत्साह खड़े थे। आचार्यप्रवर के निकट पधारते ही उन लोगों ने पूज्यप्रवर को सविनय वंदन करते हुए अगवानी की। फरसगांव में एक जैन परिवार निवासित है। आचार्यप्रवर का पदार्पण उसके सदस्यों को आह्लादित बनाए हुए था। स्थानीय जैनेतर समाज में भी अतिशय उल्लास का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। आचार्यप्रवर की अगवानी में लोगों के झुण्ड के झुण्ड पहुंच रहे थे। लोगों का हुजूम बढ़ता ही जा रहा था। लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन करने और पैदल चलकर अहिंसा यात्रा में संभागी बनने की मानों होड़-सी लगी हुई थी। जैनेतर लोगों द्वारा उच्चरित जयघोष यही अनुभूति करा रहे थे कि आचार्यप्रवर किसी सघन श्रद्धालु क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री श्री रविघोष, स्थानीय नगर पंचायत अध्यक्ष श्री गणेश दुग्गा, जिला पंचायत सदस्य श्री शिव मंडावी, प्रतिपक्ष के नेता श्री विजय लांगड़े, पूर्व विधायक लता दलेण्डी आदि गणमान्य लोग भी पूज्यचरणों में प्रणति अर्पित कर पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चल रहे थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के प्रचारक श्री जनक साहू और शिशु विद्या मंदिर की शिक्षिकाओं ने भी पूज्यप्रवर का सादर स्वागत कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर करीब ६ कि.मी. का विहार कर फरसगांव में स्थित पंडित जवाहर लाल नेहरु आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज रात्रि का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्राचार्य श्री अठभैया ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

बहीगांव में पावन पदार्पण

३१ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः फरसगांव से बहीगांव की ओर प्रस्थान किया। वातावरण में व्याप्त हल्की ठंड सूर्य के ऊर्ध्वारोहण के साथ क्रमशः न्यून होती गई, किन्तु जंगल में हजारों सघन वृक्षों की छाया ने मार्ग को सूर्य की प्रखरता से काफी बचाए रखा। इस कारण मौसम सुहावना रूप लिए हुए-सा प्रतीत हो रहा था। मार्ग में माजीआट और मस्सुकुकुड़ा के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

आचार्यप्रवर की अगवानी में बहीगांव के श्रद्धालु लोग आस्थासिक्त भावों के साथ उपस्थित थे। अपने आराध्य का अपने गांव में प्रथम पदार्पण इन श्रद्धालुओं को हर्षविभोर बनाए हुए था। बताया गया कि बहीगांव में तेरापंथ समाज के दो परिवारों की पांच शाखाएं हैं। स्थानीय जैनेतर लोगों ने भी पूज्यप्रवर को सविनय वंदन कर मंगल आशीष प्राप्त की। बहीगांव के सरपंच श्री धनीराम साहू ने ग्रामवासियों की ओर से शांतिदूत आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया। एक परिवार पूजा की थाली लिए पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुआ। पूज्यप्रवर ने उसे भी मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब १०.२ कि.मी का विहार कर बहीगांव में स्थित शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में वाणी संयम की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से बहीगांववासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

कार्यक्रम में तेरापंथ समाज की महिलाओं और पुरुषों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में पृथक-पृथक गीत को प्रस्तुति दी।

बहीगांव के सरपंच श्री खेमसिंह नेताम ने कहा-'पचास हजार किलोमीटर की पदयात्रा करने वाले महापुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं बहीगांव की जनता की ओर से स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। आचार्यश्री के रूप में हमारे गांव में साक्षात भगवान आए हैं। इसलिए आज हम बहुत खुश हैं और अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।'

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री धनीराम साहू ने कहा-'हमारे गांव और हमारे विद्यालय का अहोभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का यहां पधारना हुआ है। मैं विद्यालय परिवार की ओर से आचार्यश्री का स्वागत करता हूं। आचार्यश्री के आगमन से हमारा विद्यालय धन्य हो गया।'

हाइ स्कूल के शिक्षक श्री राजोरिया ने कहा-'परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पवित्र चरण आज हमारे गांव में पड़े, यह हमारे लिए सौभाग्य का विषय है। हमारा गांव धन्य हो गया। आपश्री की यात्रा के तीनों सूत्रों को अपनाकर हम हमारे जीवन को सफल और सार्थक कर सकते हैं।'

सांयकाल पूज्यप्रवर ने बहीगांव से बेड़मा की ओर प्रस्थान किया। अस्ताचल की ओर गतिमान सूर्य का तेज क्षीणप्रायः बना हुआ था, इस कारण मौसम सुहावना लग रहा था। बहीगांव और बेड़मा के निवासियों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। आचार्यप्रवर लगभग ३.३ कि.मी. का विहार कर बेड़मा में पधारे। शासकीय प्राथमिक शाला में आज रात्रि का प्रवास हुआ।

केशकाल में गणपाल का प्रथम पदार्पण : भव्य स्वागत

१ फरवरी। आज का सूर्य मानों केशकालवासियों के लिए सौगात लेकर उदित हुआ। केशकालवासी उसे पाने के लिए सूर्योदय से पूर्व ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए। तेरापंथ धर्मसंघ के किसी आचार्यप्रवर का अपने नगर में प्रथम पदार्पण केशकालवासियों के उत्साह और उल्लास को चरम पर स्थापित किए हुए था। पूज्यप्रवर सूर्योदय के कुछ समय बाद बेड़मा से केशकाल की दिशा में प्रस्थित हुए। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों केशकाल के निकट होते जा रहे थे, जनता की उपस्थिति और उमंग दोनों बढ़ते जा रहे थे। मार्ग में कोंडागांव के जिला पंचायत अध्यक्ष श्री देवेन्द्र माघलम ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्गवर्ती गुल्बापारा में स्थान-स्थान पर खड़े ग्रामीण दर्शनार्थियों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। इस क्रम में गुल्बापारा के सरपंच श्री शिवलाल सलाम भी लाभान्वित हुए।

आचार्यप्रवर के स्वागत में केशकालवासियों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। श्रद्धा-भक्ति के भावों से सराबोर श्रद्धालुओं का उत्साह उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर थिरक रहा था। केशकाल जनपद के अध्यक्ष श्री महेन्द्र नेताम, एसडीएम श्री दीनदयाल मंडावी, तहसीलदार श्री राकेश साहू, नगर पंचायत अध्यक्ष श्री रोशन जमीर आदि ने पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। तेरापंथ समाज के साथ अन्य जैन समाज, साहू समाज, हल्बा समाज, मुस्लिम समाज, सिंधी समाज, अग्रवाल समाज, माहेश्वरी समाज, यादव समाज, ठाकुर समाज आदि के लोग भी बड़ी संख्या में जुलूस में उत्साहपूर्ण उपस्थिति लिए हुए थे। सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थी विद्यालयी

बैंड के माध्यम से श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित कर रहे थे। पूज्यप्रवर करीब ११.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर भव्य स्वागत जुलूस के साथ शासकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यप्रवर का आज और आगामी कल के सायंकाल तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुए।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जनता को इन्द्रिय संयम की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा-'आज हम केशकाल में आए हैं। ज्ञात हुआ कि छत्तीसगढ़ के इस क्षेत्र में फलसूण्ड के लोग भी रहते हैं। मुख्यमुनि महावीर संसारपक्ष में फलसूण्ड से संबद्ध हैं। हम फलसूण्ड भी गए थे। मुनि महावीर भी हमारे साथ थे। इनका केशकाल में भी आना हो गया। यहां के लोगों में खूब धार्मिकता बनी रहे।' पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी और प्रेरणा प्राप्त कर केशकालवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

स्थानीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मदन तातेड़, ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री सुरेश कटारिया और जगदलपुर के पूर्व विधायक श्री संतोष बाफणा ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनंदन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। ओसवाल जैन समाज की महिलाओं ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया। केशकाल तेरापंथ समाज की बहन-बेटियों ने गीत के द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

गायत्री परिवार के श्री चिन्मय पांड्या पूज्य सन्निधि में

आज सायं प्रतिक्रमण से पूर्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्री प्रणव पांड्या के पुत्र श्री चिन्मय पांड्या पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सविनय वंदन किया। वे बोले--'अभी मैं बस्तर क्षेत्र की यात्रा पर हूं। यह जानकर आह्लाद हुआ कि आप भी इसी क्षेत्र की यात्रा कर रहे हैं। मुझे आपके दर्शन करने का सौभाग्य मिल गया। मैं परसों भी आना चाह रहा था, किन्तु रात्रि में काफी विलम्ब हो गया था तो मैंने सोचा कि इतनी रात में आने से आपको परेशानी हो सकती है, इसलिए मैं आया नहीं।

आप जो कार्य कर रहे हैं, वह ऐतिहासिक है और पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है। महाराजजी! आपसे मिलने का सुयोग तो कम मिल पाता है, किन्तु हमारे हृदय का संबंध हमेशा से है। आप पदयात्रा करते हैं, इसलिए दुराग्रह तो नहीं करूंगा, किन्तु जब भी संभव हो आप हरिद्वार जरूर पधारें। क्योंकि यह वर्ष 'शांतिकुंज' का स्वर्ण जयंती वर्ष है। आप पधारेंगे तो हमें प्रसन्नता भी होगी और गौरव भी होगा।'

उन्हें आचार्यप्रवर के सन् २०२३ तक निर्धारित कार्यक्रमों की जानकारी दी गई तो वे बोले--'फिर तो मैं यही कामना करूंगा कि आपके चरण जहां भी पड़ें, वहीं 'शांतिकुंज' हो।'

केशकाल प्रवास का दूसरा दिन

२ फरवरी। पूज्यप्रवर के द्विदिवसीय केशकाल प्रवास का दूसरा दिन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में शांति प्राप्ति के सूत्रों की चर्चा की।

कार्यक्रम में मुख्यमुनिश्री और मुख्यनियोजिकाजी के वक्तव्य हुए। बालिका जीविका जैन, बालक आरव जैन, श्री राजकुमार तातेड़, डॉ. रोहित तातेड़, श्री जसराज तातेड़, श्री कानमल तातेड़, और सुश्री वीणा बोहरा ने पूज्यप्रवर के पदार्पण में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अपनी प्रस्तुति दी गई।

विद्यालय के पूर्व प्रिंसिपल श्री जी.एस. मिश्रा ने कहा-'पृथ्वी की परिधि से भी अधिक पदयात्रा करने वाले हम सबके प्रेरणास्रोत आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज हमारे शहर में विराजमान हैं, यह हम सबका सौभाग्य है। यह दण्डकारण्य भगवान राम का विहरण क्षेत्र रहा है, किन्तु इस कलियुग में आचार्यश्री महाश्रमणजी के

रूप में श्रीराम का पुनरागमन हुआ है, यह इस धरती का सौभाग्य है। यहां के लोग कितने भाग्यशाली हैं, जिन्होंने आचार्यश्री की वाणी रूपी अमृत की वर्षा यहां होते देखी है, अनुभूत की है। संभवतः केशकाल की भूमि में ऐसा महान संत न कभी आया और न ही कभी आएगा।'

सायंकाल स्थानीय विधायक श्री संतराम नेताम आदि ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वे पूज्यप्रवर के सायंकालीन विहार में पैदल भी चले। आचार्यप्रवर केशकाल के शासकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय से प्रस्थित हुए। इस अवसर पर आचार्यप्रवर के आसपास जैन एवं जैनेतर लोग बड़ी संख्या में पैदल चल रहे थे। लोगों का उत्साह उनके बुलंद जयघोषों में मुखर बना हुआ था। कई श्रद्धालुओं को विहार के दौरान अपने-अपने घरों आदि के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर करीब २.२ कि.मी. का विहार कर केशकाल में ही स्थित गिरिदीप हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आचार्यप्रवर का द्विदिवसीय केशकाल प्रवास संघ प्रभावक और बहुउपयोगी रहा। जहां तेरापंथ समाज के श्रद्धालुजन और विभिन्न क्षेत्रों से समागत उनके ज्ञातिजनों ने अपने आराध्य के प्रथम केशकाल प्रवास का भरपूर लाभ उठाया, वहीं स्थानीय अन्य जैन एवं जैनेतर समाज को भी तेरापंथ धर्मसंघ को निकटता से देखने व जानने का अवसर मिला। आचार्यप्रवर के अलौकिक पवित्र आभामंडल ने उत्सुकतावश आए नवागंतुकों के मन में भी श्रद्धाभावों को प्रसूत कर दिया।

केशकाल घाटी में गूंजा अहिंसा यात्रा का संदेश

३ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः केशकाल से खालेमुखेण्ड के लिए प्रस्थान किया। कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर केशकाल घाटी प्रारम्भ हो गई। एक ओर हरे-भरे पहाड़ तो दूसरी ओर हरी-भरी खाइयां इस पथ के सौन्दर्य को वृद्धिंगत बनाए हुए थे। वृक्षों की छाया इतनी सघन थी कि कई स्थानों पर धूप अदृश्य-सी बनी हुई थी। इस कारण कुछ शीतलता का भी अहसास हो रहा था। वानर जाति के प्राणियों की टोलियां यत्र-तत्र उछल-कूद करते हुए दिखाई दे रही थीं। पक्षियों का कलरव जंगल के शान्त वातावरण में और भी मधुर लग रहा था। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस घाटी की सुषमा आचार्यप्रवर की उपस्थिति से और भी बढ़ गई। यह घाटी जितनी मनोहारी प्रतीत हो रही थी, उतनी ही खतरनाक भी थी।

तीखे घुमाव और आरोह-अवरोह सावधानी का निर्देश लिए हुए थे। कई घुमावों के द्वारा इस घाटी के तीखेपन को कम करने की कोशिश की गई तो थी फिर भी इस घाटी के आरोह और अवरोह किसी भी राहगीर को थकाने में समर्थ प्रतीत हो रहे थे। पूज्यप्रवर केशकाल से कांकेर की ओर पधार रहे थे, इसलिए उतार ज्यादा था, जिस पर चलते हुए पैरों को ब्रेक की अपेक्षा महसूस हो रही थी। सामने की ओर से आते हुए वाहन मानों रेंगते हुए-से आरोहण कर रहे थे। वाहनों से निकल रही घर्र-घर्र की आवाज आरोहण के दौरान लग रही इंजन की शक्ति को दर्शा रही थी और पीछे से आ रहे वाहनों से निकल रही चीं-चीं की आवाज चालक द्वारा ब्रेक पर दिए जा रहे दबाव को अनुमानित करवा रही थी। स्थान-स्थान से टूटा हुआ यह पथ उबड़-खाबड़ रूप में था, किन्तु इस विषम पथ पर भी आचार्यप्रवर का समत्व भाव अक्षुण्ण रहा। घाटी के बाद का पथ भी विषमता धारण किए हुए था। कहीं-कहीं तो केवल मिट्टी बिछी हुई थी, जिसके कण वाहनों के आवागमन के कारण वातावरण को धुंधला बना रहे थे। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर खालेमुखेण्ड में स्थित शासकीय हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में मानव जीवन की दुर्लभता पर प्रकाश डालते हुए उसे सफल बनाने के सूत्रों की चर्चा की।

आज रायपुर के विधायक तथा छत्तीसगढ़ के पूर्व मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

महाश्रमणमय बना कांकेर का कण-कण

४ फरवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः खालेमुखेण्ड से कांकेर के लिए प्रस्थान किया। उल्लसित कांकेरवासी पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंचते जा रहे थे। कांकेरवासियों के उल्लास और श्रद्धाभावों को देखकर यह जानना तो क्या, अंदाज लगाना भी कठिन हो रहा था कि कांकेर में एक भी तेरापंथी परिवार नहीं है। पूज्यप्रवर ने मार्ग में कोंडागांव जिला से कांकेर जिला में प्रवेश किया।

बस्तर संभाग के डी.आई.जी. श्री विनीत खन्ना, कांकेर जिला के एस.पी. श्री एम.आर. अहीरे, विधायक श्री शिशुपाल आदि ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे लोग काफी दूर तक पूज्यप्रवर के आसपास पैदल भी चले। कांकेर नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती सरोज ठाकुर के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांकेरवासियों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। बुलंद जयघोष जनता के उत्साह की अभिव्यक्ति के साधन बने हुए थे। माहेश्वरी समाज के लोग भी स्वागत जुलूस में सोल्लास संभागी बने हुए थे। बालोद, दल्लीराजहरा, सरोणा, चंबलपुर, भानुप्रतापपुर, नरहरपुर, लखनपुरी आदि के निवासी अन्य जैन समाज के लोग भी इस अवसर पर आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित थे। सबके आस्थासिक्त भावों को स्वीकार करते हुए पूज्यप्रवर करीब १२.८ कि.मी. का विहार कर कांकेर में स्थित बाफणा लॉन में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण और प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर बाफणा परिवार हर्षाभिभूत था।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन के दौरान अपने पावन प्रवचन में जनता को मानव शरीर रूपी नाव से संसार समुद्र को पार करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा-'छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग की यात्रा के दौरान आज कांकेर में आना हुआ है। यहां के लोगों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का प्रभाव रहे।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से स्थानीय विधायक श्री शिशुपाल शौरी, कलेक्टर श्री चंदनसिंह आदि के साथ कांकेरवासियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

स्थानीय विधायक श्री शिशुपाल शौरी ने कहा-'हम सभी कांकेरवासी आज बहुत ही गदगद और उत्साहित हैं कि हमारी धरती पर आचार्यश्री महाश्रमणजी पधारे हैं। मैं कांकेर की समस्त जनता की ओर से आपका सादर स्वागत करता हूं। आचार्यश्री के संदेशों को जीवन में उतार लिया जाए तो एक बहुत अच्छे समाज की स्थापना हो सकती है। आपका आशीर्वाद हम सब पर हमेशा बना रहे।'

कांकेर जिला कलेक्टर श्री चन्दनसिंह ने कहा-'गुरुदेव! मैं बचपन से कहानियों में पढ़ता था कि नदी के किनारे, पहाड़ के नीचे कोई धर्मसभा होती थी, उसमें बड़ी संख्या में लोग जाते थे और लोग प्रवचन से प्रभावित होते थे। यह मेरे जीवन का पहला अवसर है और मुझे अनुभूति हो रही है कि जैसे मैं पुस्तकों आदि में पढ़ता था, आज आपके आने से मैं ठीक उसी वातावरण का साक्षात अनुभव कर पा रहा हूं। जब मुझे आपके आगमन की जानकारी मिली, तब ही सोच लिया था कि मैं आपके दर्शन अवश्य करूंगा। दर्शन करने आया तब सोचा कि कम से कम पांच मिनिट तो आपका प्रवचन सुनूं। जब मैंने पांच मिनिट प्रवचन सुना तो लगा कि मुझे पूरा प्रवचन सुनना चाहिए। प्रवचन सुना तो मन हुआ कि पूरी सभा में उपस्थित रहूं।

मैं नालन्दा में जन्मा। वहां हिन्दू, बौद्ध और जैन का संगम है। मुझे ऐसा लग रहा है कि उस भूमि का ही प्रभाव है कि मुझे आपका सान्निध्य मिल रहा है। आपने जब सुकमा में प्रवेश किया, जब से मैं आपकी यात्रा को नजदीकी से फोलो कर रहा हूं। सुकमा से लेकर कांकेर जिला तक का यह बस्तर संभाग हरा-भरा और प्रकृतिक सौंदर्य से भरपूर होने के बावजूद यहां की भूमि रक्तरंजित है। ऐसी भूमि पर आकर आप हमें शांति और अहिंसा का मार्ग दिखा रहे हैं। आने वाले समय में बस्तर संभाग का कोई इतिहास लिखा जाएगा तो उसमें यहां शांति की स्थापना करने में आपके योगदान, आपकी पदयात्रा, आपके द्वारा लोगों को प्रेरित करना आदि का निश्चित तौर पर उल्लेख होगा। इस धरा पर पधारकर यहां के लोगों को सन्मार्ग की दिशा प्रदान करने हेतु मैं अपनी ओर से तथा प्रशासन की ओर से आपके चरणों में नमन करता हूं।'

सकल जैन संघ-कांकेर के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र गोलछा और बाफणा लॉन की ओर से श्री अभय कुमार बाफणा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने श्रद्धाभिव्यक्ति दी। कांकेर जैन समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। जैन समाज के बालक-बालिकाओं ने पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

सायंकाल परमाराध्य आचार्यप्रवर कांकेर के बाफणा लॉन से प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर शहर के बीच से शहर के उस पार पधार रहे थे। इस अवसर का भी शहरवासियों ने पूरा लाभ उठाया। स्थान-स्थान पर लोग आचार्यप्रवर के दर्शन की ललक लिए खड़े थे। आचार्यप्रवर उनके निकट पधार रहे थे तो आस्थाभावों से ओतप्रोत वे लोग आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित कर रहे थे। विहार के दौरान विभिन्न संगठनों, संस्थाओं के लोगों के निकट पूज्यप्रवर अपने चरण थामकर दर्शनार्थियों पर आशीषवृष्टि की। इसी क्रम में स्थानीय नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती श्रीमती सरोज ठाकुर और सभी पार्षदों ने पूज्यचरणों में वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। चेम्बर ऑफ कॉमर्स, कायस्थ समाज, जैन समाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, वामदल, सिंधी समाज, देवांगन समाज, अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज, सिक्ख समाज, कोसरिया पटेल, माहेश्वरी समाज, भारतीय जनता पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी परिवार, 'हौसला एक प्रयास', योग विद्या साधना केन्द्र आदि समाजों/संस्थाओं/संगठनों के लोगों ने अहिंया यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर का अभिनंदन किया।

स्थानीय जैन समाज का उल्लास तो मानों चरम पर था। जैन समाज के लोगों ने भी अपने-अपने घरों आदि के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष का लाभ प्राप्त किया। जनता की विराट और उल्लासपूर्ण उपस्थिति आचार्यप्रवर के विहार पथ को महाश्रमणमय बनाए हुए थी।

आज के सायंकालीन गंतव्य स्थल से कुछ दूर पहले बोर्ड पर अंकित था--भालू विहरण क्षेत्र। जंगली भालू जाति के दो प्राणी पहाड़ से उतरकर सड़क के निकट आए हुए थे। वे कुछ दूरी से पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बने। आचार्यप्रवर करीब ५.५ कि.मी. का विहार कर कांकेर में स्थित सेंट माइकल हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल फादर श्री मनीष एन्थोनी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

रात्रि में अर्हतवन्दना के पश्चात कांकेर के कुछ न्यायाधीश आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे। कुछ ही समय में कांकेर जिला कलेक्टर और जिला पुलिस अधीक्षक भी पहुंच गए। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विद्या भारती और बजरंग दल से जुड़े हुए कांकेर के प्रमुख कार्यकर्ता भी उसी समय पहुंच गए। इस प्रकार पूज्यप्रवर का प्रवास कक्ष गणमान्यों और अन्य लोगों से भर गया। समागत न्यायाधीशों में से एक की जिज्ञासा को समाहित करते हुए पूज्यप्रवर ने आचार्य तुलसी का एक प्रसंग सुनाकर कहा--'धर्म आचरणों में आना चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के नाम से जनता के लिए एक आंदोलन की शुरूआत की। अणु यानी छोटा, व्रत यानी नियम। छोटे-छोटे नियम अणुव्रत कहलाते हैं। जैसे-- मैं निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा, मैं नशा नहीं करूंगा, मैं ईमानदारी का पालन करूंगा आदि। उन्होंने कहा कि जैन/अजैन कोई भी हो, इंसान अच्छा इंसान बने। उन्होंने नैतिकता को गंगा कहा। नैतिकता की गंगा में स्नान कर मन को पवित्र बनाया जा सकता है। (पूज्यप्रवर ने अणुव्रत गीत का सव्याख्या आंशिक संगान किया।)

इंसान से लगती हो सकती है, किन्तु गलतियों का परिष्कार होते रहना चाहिए। कपड़ा गंदा होता है तो वह धोने से साफ भी हो सकता है। हमारी अहिंसा यात्रा में इंसान को अच्छा इंसान बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत का भाग्य है कि यहां संतों की परंपरा हजारों वर्षों से चल रही है। यह भारत के लिए बहुत ही अच्छी बात है कि उसके पास संत संपदा है। भारत के पास ग्रन्थ संपदा भी है। कितना-कितना प्राचीन साहित्य है। भवद्गीता, जैन आगम, धम्मपद, पुराण, कुरान, बाइबिल आदि कितने ग्रंथ भारत के पास हैं। भारत के पास पंथ संपदा भी है। जैन, बौद्ध आदि अनेक पंथ भारत में हैं। अच्छी बात किसी भी संत, ग्रंथ और पंथ से मिले स्वीकार कर लेनी चाहिए।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2021-23 Wed.-Thu.
L.No.-U(C)-200/2021-23
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

भारत को भौतिक विकास चाहिए। उसके लिए आर्थिक विकास भी चाहिए। उसके साथ भारत में नैतिकता और आध्यामिकता का भी विकास होता रहे तो भारत और ज्यादा अच्छा देश बन सकता है।'

एक न्यायाधीश ने आचार्यप्रवर ने निवेदन किया--'यह हम लोगों का अहोभाग्य है कि आप इस क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं। इस कारण हमें आपसे इतना कुछ मिल रहा है।'

पूज्यप्रवर ने कहा--'हम हैदराबाद से चले तो हमने यह रास्ता ले लिया।'

कलेक्टर श्री चंदनसिंह ने कहा--'आपने कोंटा, सुकमा, दंतेवाड़ा आदि वाला मार्ग लेकर हम पर कृपा की। इससे हमें आपके दर्शन का सौभाग्य मिल गया।'

वार्तालाप के दौरान आचार्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित प्रमुख गणमान्य लोगों के नाम इस प्रकार हैं--कुटुंब न्यायाधीश श्री जितेन्द्र जैन, ए.डी.जे. श्री प्रशांत कुमार शिवहरे, कांकेर जिला कलेक्टर श्री चंदन सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री एम.आर. अहीरे, कांकेर जिला शिक्षाधिकारी श्री राकेश पाण्डेय, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक तथा छत्तीसगढ़ विद्या भारती के संगठन मंत्री श्री देवनारायण, विभाग प्रचारक श्री रोशन साहू आदि।

गुरुकुल में हुए गोविन्द के दर्शन

५ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कांकेर से कानापोड़ (लखनपुरी) की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक गांवों के लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर करीब १४.५ कि.मी. का विहार कर कानापोड़ (लखनपुरी) में पधारे। रघुराजसिंहदेव शासकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज सायं तक का प्रवास हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से लखनपुरी में प्रवासित पांच जैन परिवारों में आह्लाद का वातावरण था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में सत्य की महत्ता को विवेचित किया। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से ग्रामवासियों ने अहिंया यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री बसन्तसिंह दीवान ने कहा-'आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणस्पर्श और आशीर्वाद से हमारा विद्यालय प्रांगण धन्य हो गया। मैं समस्त विद्यालय परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। आप ऐसा आशीर्वाद दें कि हमारा विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थी खूब उन्नति करते रहें।'

कांकेर के डी.आई.जी. श्री विनीत खन्ना ने कहा-'आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में साक्षात भगवान हमारे बीच विराजमान हैं। पूरे बस्तर क्षेत्र की धरती आपके चरण का स्पर्श पाकर धन्य हो गई। मैंने पहले पढ़ा था-- 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय' आज तो गुरुकुल में आचार्यश्री गोविन्द रूप में हमारे बीच विराजमान हैं। इससे अच्छा अवसर मिल नहीं सकता। मैं राजनांदगांव का हूं, मैं वहां पुनः आपकी सेवा में उपस्थित रहूंगा। मैं यही कामना करता हूं कि मुझे आपका सान्निध्य बार-बार मिले। बस्तर की जनता पर आपका आशीर्वाद बना रहे।'

रायपुर उत्तर के पूर्व विधायक श्री श्रीचन्द सुन्दरानी ने भी अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

सायंकाल आचार्यप्रवर कानापोड़ (लखनपुरी) से लगभग ५.६ कि.मी. का विहार कर बाबूकोहका गांव में पधारे। यहां स्थित बालक छात्रावास में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला